ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

आनलाईन कक्षा -६

हिन्दो

पाठ -1

आओ हम अच्छे बने

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 231
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 75102

लिखित :

भाव स्पष्ट कीजिए –

‘हमारी शाला है विवेकियों की
हम अविवेकी बनें तो कैसे ?“

उत्तर – प्रस्तुत पंक्ति डॉ. सिद्धय पुराणिक के द्वारा रचित ‘आओ ! हम अच्छे बनें कविता से लिया गया है । इन पंक्तियों में कवि भारत के नागरिकों को प्रेरणा देते हुए कह रहे हैं कि हमारा भारत में बहुत सारे महापुरुषों ने जन्म लिया है । जिनके विवेक, गुण, बुद्धि तथा ज्ञान के कारण हमारा भारत आज सारे विश्व में महान बन पाया है । उसी महान देश तथा उन महापुरुषों के वंशज होने के कारण हम अविवेकी नहीं बन सकते ।

ODM
EDUCATIO
Char

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए –

क) प्र- कवि ने किस प्रकार विरोधाभास जताया है ?

उ-विरोधाभास का अर्थ है विरोध करना अर्थात् कवि ने इस कविता में छोटे, गरीब, नीतिहीन, कामचोर, अविवेकी आदि शब्दों के माध्यम से विरोधाभास जाताया है, क्यों कि हमारा भारत देश, बड़ा, धनी, नैतिक, श्रमजीवी तथा विवेकियों से भरा है ।

ख) प्र – शालाएँ देश की प्रगति में साधक हैं, कैसे ?

उ- शालाओं में विभिन्न प्रकार के आविष्कार तथा खोज की जाती है । अपने बुद्धि एवं कर्म के फल बुते पर वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करते है । इसलिए यह हमारे प्रगति के साधक हैं ।

ग) प्र-इस कविता का अन्य शीर्षक क्या हो सकता है ?

उ- इस कविता का अन्य शीर्षक 'अनोखा भारत', 'अतुल्य भारत' हो सकता है ।

ODM
EDUCATIO
Char

गृहकार्य:

लिखे गए प्रश्नोत्तर को गृहकार्य कॉपी में लिखो ।

ODM
EDUCATIO
Char

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM
EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow